Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-3* *Issue-1* *January 2026*

www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

वर्तमान समय में वृद्ध विधवाओं की समस्या

बालिका कांबळे

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, श्री कुमारस्वामी महाविद्यालय, औसा, लातूर (महाराष्ट्र)

Article Info: *(Recieved- 06/11/2025, Accept- 16/12/2025, Published- 10/01/2026)*

DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i1001

वर्तमान समय में वृद्धजनों की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। सम्पूर्ण विश्व में एक आकलन के अनुसार 60 वर्ष के ऊपर उम्र वालों में जनसंख्या के हिसाब से भारतवर्ष चौथे स्थान पर है। वृद्ध पुरुष तो ऐने–केन प्रकारेण परिवार में अपनी गुजर–बसर कर लेता है, परन्तु वृद्ध महिला का जीवन वृद्ध पुरुष की अपेक्षा अधिक कष्टमय है। इसका कारण यह है कि वृद्ध स्त्रियाँ शारीरिक असक्षमता के कारण की चहारदीवारी के अन्दर ही कैद जिन्दगी व्यतीत करने के लिए विवश होती हैं। इसका एक कारण यह भी है कि परम्परागत रूप से हमारा समाज पुरुष प्रधान रहा है जिसमें स्त्री दोयम दर्जे के रूप में स्थित रही है। यही कारण है कि उसे पुरुष की अपेक्षा अत्यधिक पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

वृद्ध महिलाओं की उपेक्षा के मुख्य कारण इस प्रकार हैं–

1. शारीरिक असक्षमता।
2. विधवा स्त्री को धार्मिक कार्यों में सम्मिलित होने की अनुमति न होना।
3. विधवा स्त्री को मांगलिक कार्यों से अपशकुन के कारण पृथक रखना।
4. विधवापन एक अभिशाप।
5. विधवापन में वृद्ध महिला को तानें सहन करना।
6. विधवा महिला का अधिकतर आर्थिक स्रोत न होना।
7. मानसिक निराशा एवं अकेलेपन की समस्या आदि।

''संयुक्त परिवार के विघटन ने भी वृद्ध विधवा महिलाओं के जीवन को नरकभय बना दिया है किन परिस्थितियों में इस समस्या का प्रादुर्भाष हुआ? यह शोध का विषय है।''[1] इतना अवश्य है कि जब से वृद्ध विधवाओं की समस्याएँ आयीं तब से वे घटने की बजाय दिन–व–दिन निरन्तर विकराल स्वरूप धारण करती जा रही हैं। क्या हमारा समाज इतना निर्दयी हो गया है कि अपनी जन्मदात्री, पालनकर्ती माता को घर से निकालकर वृद्धाश्रम को शरण में जाने के लिए विवश कर रहा है।

''वृद्धावस्था मानव जीवन का अन्तिम पड़ाव है इसके पश्चात् व्यक्ति को यमराज की गोद में सोना पड़ता है। बाल्यावस्था की नींव पर जिन इच्छाओं, आशाओं एवं अपेक्षाओं के अनुरूप भवन का निर्माण किया जाता है उसके उत्कर्ष का दायित्व युवावस्था वहन करती है इसके अतिरिक्त इन भवनों को शोभायमान एवं सुन्दर रखने का दायित्व वृद्धावस्था पर होता है।''[2]

समाज के अधिकतर वृद्धजन विशेषकर महिलाएँ निजी पारिवारिक झगड़ों, गिरते स्वास्थ्य के स्तर, पुत्रियों की शादी न हो पाने तथा पुत्रों को नौकरी न मिलने एवं व्यवसाय आदि में असफल हो जाने के कारण अत्यधिक परेशानी में रहती हैं जिसके कारण उनका जीवन नरकमय बन जाता है। बुढ़ापे में जोड़ों का दर्द कमर दर्द, सुगर (मधुमेह) एसीडीटी तथा ब्लडप्रेशर (रक्त–चाप) आदि की बीमारी से वृद्ध महिलाएँ अत्यधिक व्याकुल रहती हैं। सर्वाधिक चिन्ता का विषय होता है उनका सौन्दर्य समाप्त होना। जो अपने जमाने में हीरोईन सरीखी थी वही आज बुढ़िया सी बदसूरत बन गयी होती है। जिस पर युवा मरते थे आज उस ओर कोई भूलकर भी नहीं देखता है। उसके बालपन जैसे पकड़कर सफेद हो गये हैं। मुँह पोपला हो गया है। दाँत गायब हैं। होंठ बदसूरत हो गये हैं। आँखें किसी जमाने में जो करार कटार का (तिरछे नयन छूरी जैसे) काम करती थीं, वह आज अन्दर

की ओर धँस गयी हैं। नागिन जैसी चाल कुतिया चाल में परिवर्तित हो गयी है इन्हीं सब कारणों वृद्ध महिलाओं की मनः स्थिति एकदम बेकार हो जाती है जीवन निराशा में डूब जाता है ऊपर से बहू–बेटे कार्यों का बोझा उस पर डालकर रही– सही कसर भी पूरी कर देते हैं। उस स्थिति में वृद्ध स्त्री की कारण आवाज में यह स्वर निकालता है– हाय! बुढ़ापा जीवन तेरी यही कहानी...

वृद्धावस्था अर्थात् वृद्धों के जीवन के विषय में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी इस प्रकार लिखते हैं कि–

''अब वे वासर बीत गये,
मन तो भरा–भरा है लेकिन,
तन के सब रस रित गये
चमक छोड़ चौमासे बीते,
कम्बल छोड़कर शीत गये,
लेकर मधु की ऊष्मा सारी,
मेरे मन के पीत गये,
अब तो केवल गूँज बची है,
जीवन के सब गीत गये,
राम जानें इस जीवन में
हम हारे या जीत गये।''[3]

वर्तमान समय अति वेग गति से बदलाव होने से पारिवारिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवेश के कारण हमारे भारतीय समाज में वृद्धजनों के जीवन में पनप रही कुण्ठा, मानसिक रोग, निरन्तर गिरता स्वास्थ्य, तनाव, अकेलापन, असुरक्षा की भावना, शारीरिक दुर्बलता, आर्थिक संसाधनों की कमी तथा अभाव की जिन्दगी आदि समस्याओं में निरन्तर वृद्धि हो रही है। सिकुड़ रहे परिवारों ने वृद्धजनों के रहन–सहन की जर्जर दशाओं तथा परिवार में उनके शीर्ष वर्चस्व को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। शारीरिक एवं क्रियाशीलता के अभाव ने जहाँ एक ओर वृद्धों को पारिवारिक सदस्यों पर आश्रित रहना पड़ रहा है वहीं दूसरी ओर परिवारीजनों के दुर्व्यवहार एवं उपेक्षा के कारण वृद्धजन स्वयं असहाय एवं लाचार समझने लगे हैं।

''वृद्धजनों के बेहतर समायोजन में परिवार की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है, परन्तु परिवर्तित परिस्थितियों के कारण वृद्धजनों के सम्मान को ठेस पहुँच रही है। हमारे सामाजिक मूल्यों में वृद्धजनों की सेवा करना, उनका आदर करना तथा उनके प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना आदि को हमारा प्रथम कर्तव्य माना गया है।''[4]

विधवा वृद्धाओं की स्थिति समाज में अत्यन्त दयनीय एवं सोचनीय है। सती प्रथा का उल्लेख हमें वैदिक काल में नहीं प्राप्त होता है, न ही ब्राह्मण ग्रंथों में ही। 1500 से 700 ईसा पू. गृह सूत्र 600 से 700 ईसा पू.,में भी कहीं पर सती दाह का उल्लेख हमें नहीं प्राप्त होता है। धर्म सूत्रकारों तथा स्मृतिकारों में विधवा महिलाओं के लिए समाज में कुछ नियम कायदे जरूर स्थापित किये थे। उपरोक्त ग्रंथों में कहीं पर भी मृत पति के साथ जिन्दा महिला के जलने का उल्लेख नहीं प्राप्त होता है। हमारे देश भारतवर्ष में दसवी सदी में सती प्रथा को प्रभाव में वृद्धि हुई महाभारत काल में भी कुछ–कुछ स्थानों पर सती प्रथा का उल्लेख प्राप्त होता है। इस संदर्भ में साहित्यकार चंद्रबली त्रिपाठी जी का कथन इस प्रकार है–

''जिस सती प्रथा की उत्पत्ति तथा विकास के पीछे एक आदर्श की प्रेरणा थी, भारत की अवनति के दिनों में वही एक कुरीति में परिवर्तित होकर अवांछनीय हो गयी। सती होने में पति के साथ सहगमन की जो पवित्र प्रेरणा तथा एक मात्र अभिलाषा थी, उसका स्थान लोक लज्जा और भावी दुःखों की सच्ची अथवा उसके उत्तराधिकार के लोलुप सम्बन्धियों ने उसे न केवल भुलवो में लेकर बल्कि बलपूर्वक सती होने के लिए बाध्य करना प्रारम्भ कर दिया जो सती प्रथा का सर्वाश में विपर्याप्त तथा अमानवीय क्रूरता में परिणति थी।''[5]

यह सोचकर आत्मा काँप उठती है कि धार्मिक एवं सामाजिक कुरीति के चलते जिस स्त्री को जिन्दा पति की चिता के साथ जला दिया जाये वह भी जबरन तो इससे अधिक सती प्रथा महिला उत्पीड़न का क्रूरतम उदाहरण क्या हो सकता है।

कहते हैं कि वृद्धावस्था बाल्यावस्था की वापसी होती है जिस प्रकार बच्चों का मन खाने की चीजों के लिए लालायित रहता है उसी प्रकार वृद्धों की जिह्वा भी स्वादिष्ट भोजन को देखकर स्वाद के लिए लालायित होती है। प्राचीनकाल में समाज में मनीषियों ने चार पुरुषार्थ धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष की विशेषताओं को स्वीकार किया था। धर्म अर्थ और काम यह तीन अलग–अलग पुरुषार्थ हैं जबकि मोक्ष को धर्म में सम्मिलित किया गया है। ये एक दूसरे के पूरक हैं तथा मुक्ति मार्ग प्रदेय हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में भोली–भाली जनता की संतुष्टि के लिए प्रगतिवादी समय ने अपने स्वरूप में परिवर्तित कर लिया है। मानव का मुख्य उद्देश्य अर्थार्जन है अर्थात् पैसा! समय ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मनुष्य पैसा ही खा

रहा है। समाज में समता एवं मानवता का अभाव हो गया है। मानवता के विकास में पूँजीवाद बाधक है। समाज की छोड़ों अपने निजी परिवार की देखरेख में भी ये पैसा ही बाधक है। चतुर्दिक हाय! पैसा हाय! पैसा की धूम मची हुई है। येने–केन प्रकारेण पैसा आये। इसके चक्कर में मानव–मूल्य निरर्थक हो गये हैं। यही कारण है कि आज के समय में वृद्धजन उपेक्षित हैं। मानव विशेषकर युवा पीढ़ी को इस बात का ज्ञान नहीं है कि मेरा भी एक–न–एक बुढ़ापा आयेगा। सच में वृद्धावस्था वर्तमान समय में दुःखदायी है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ

1. उपेक्षा की शिकार वृद्ध महिलाएँ–डॉ. अंजू शुक्ला, पृ. प्राक्कथन, संस्करण 2019, संकल्प प्रकाशन कानपुर।
2. हिन्दी कहानियों के आईने में वृद्ध विमर्श– डॉ. दीपिका परमार, पृ. 56, संस्करण 2021, उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स कानपुर।
3. वृद्ध विमर्श परम्परा और आधुनिकता का द्वन्द्व– डॉ. ज्योति सूर्यवंशी, पृ. 84, संस्करण 2023, संकल्प प्रकाशन कानपुर
4. वही, पृ. 41
5. भारतीय समाज में नारी आदर्शों का विकास– डॉ. चन्द्रबली त्रिपाठी पृ. 168 संस्करण 1981, दुर्गावती प्रकाशन गोरखपुर।

Cite this Article

'बालिका कांबळे, "*वर्तमान समय में वृद्ध विधवाओं की समस्या*", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:1, January 2026.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."